

विकास
[पांच टा चिह्नी]

चतुराननः

आठ आना

व्यस्तन प्रत्यमाला क २ रदन

विकास
(पाँच टा चिह्नी)

चतुरानन

आठ आना

एवम् ॥) चान्ना

प्रकाशक—
श्री शंकरानन्द मिश्र (मोक्षगार)
जन-प्रकाशन-भवन
मधुबनी (दरभंगा)



अवधूत, सम्बत् २००३
प्रथम संस्करण—१०००
१९४८

शुद्ध—
नया विहार प्रेस, लि०
कलमकुर्मा, पटना



पाठक सँ

अपना समाज में ई भारवा बड़ प्रयत्न अछि जे ई निरव, सर्वोप पूर्ण, कोनो बतुर कारिगरक मन-उमंग क व्यवहार कल नीक। एक बेरि बलि इकरा परम सत्य मामि छी त अपन व्यवहार चुन तब खबर केत छी और हम-अहाँ कोनो अवरदस्त खुदा में बान्हल पशु छी, नकरा दीर्घ में की मोन लगते ? तँ पर से अति प्राचीन साधुयोग उपनिषद क पूर्ण अन्त क रस अपन धर्मियो शोक नहि राखि छोडे छी। ई भारवा मृतकाक में कतेक हा खर्चनारा क नहि छल तकर दिशाव छोड़।

(सत्य ओएह नीक जे व्यवहार सिख हो। प्रति सदा परिवर्तनशील दुनिया में परम सत्य ज्ञान त असम्भव अछि किन्तु सापेक्ष माने ओकरा मान्यअसम्भव नहि।)

—बर्तमानो में ई कतेक अवल अछि और कतेक वातक।

एहि पांच ठा बिट्टी में जे प्रथम एक साधारण साधार मैथिल कन्हा में लिखल गेल अछि बिकाबवाक क सत्यता दिखल जेवाक प्रयास केत गेल अछि। कोनो दार्शनिक विचार क तर्क क अणुअणु-मंडन क पूर्व ई राखल हम उचित मुझलहुं। राखबाक एक मात्र उद्देश्य अछि जे पदनिर्धार अपन आलोचनात्मक विचार विनिमय में हमरो मिलायबि। ई विचार कोनो हमर शैक्षिक नहि अछि से कबि से कहू, एतने कहै की ई जे हम आलोचनात्मक से एकरा माने की।

हमर एहि तरहक प्रयास एहि हेतु ए अछि जे कतेको प्रगतिशील लोक, समाजपति क निरंकुश 'आंकुरा' क हरे सत्य साहित्य छिन्नना में एम्बू भेल, आवाक आनि जकां तरेतर घघकि रहल छथि, ओ लोकनि एकरा पढ़ि, अपन सत्य विचार तथा सत साहित्य लोकक सामने रखवा में समर्थ होथु और एहि पुस्तक क लुटि पर ध्यान नहि दे, एहि सँ बढ़िया पुस्तक समाजक सामने राखि, पाँच आगल समाज के पतिशील बनएवा में सहायक होथु ।

चतुरानन

'केसक' एहि पुस्तक क नाम "पाँच टा चिट्ठी" मात्र राखि, तटस्थ छला, मुदा हमरा ओहि नाम सँ तृप्ति नहि भेल और हम एकर नाम 'विकास' राखि समाजक भीतर पंडित, पूंजीपति प्रभृति सँ बड़ैल पंच पंच करैत दुर्गन्ध युक्त बरसाती अन्धरिया सन, धार्मिक, आर्थिक तथा सामाजिक अन्धकारक खेल एकरा वास्तविक 'विकास' पुष्पैत छी, और जहाँ विकास भेल कि चोरके चिन्हैत देरी नहि लागत और चिन्हैत देरी चोरक द्वारा की होइत छैक, से तऽ पुष्पैत अछि

—“माथुर”

विश्व

एहि चिट्ठी में हम लिखै छी जे ई संसार ककरा कहै छै ? ई बात त सब बजै अछि जे एहि संसार क अन्त नहि छै, संसार अनन्त अछि, सीमारहित अछि, मुदा कोना अनन्त अछि ई सबकेओ नहि जनै अछि ।

एहि विश्व में प्रथम विशाल वस्तु जकरा सबकेओ जनै छी ओ थीक पृथिवी । पृथिवी चौड़ा नहि गोल अछि, एकरा त प्रायः आब सब मानै अछि भने ई देखैत चौड़ा बुझाए । मुदा एखनहुँ तक बहुत गोटे एहि भ्रम में अछि जे पृथिवी काछु पर तऽ शेषनागक फण आदि पर अछि । संग-संग ई हो जे काछु करोड बदलऽ लगै अछि तखन भूकम्प भ जाइ अछि । यथार्थ में पृथिवी सूर्य, शुक्र, बुध, मंगल, बृहस्पति, शनि, वरुण, एरोस, नेपचूँ और प्लूटो आदि जकाँ एक टा ग्रह मात्र टा छथि । चन्द्रमो एक टा ग्रह छथि मुदा बहुत छोट और खदखन पृथिवीक चारुकात घुमैत रहै छथि ।

वैज्ञानिक लोकनि तरह-तरह क हिसाब और खोज सँ पृथिवीक आकार-विस्तार, गर्भ, तौल, वायुमंडल, गति, कच, आयु, प्रारम्भिक अवस्था और तकर बाद क अवस्था, जन्म आदि बहुत बातक विषय में बहुत किछु ज्ञान हासिल कएलैन्ह अछि जे सबकेओ मानै अछि कारण, ओ व्यवहार सिद्ध

अग्नि। पृथिवी करीब-करीब संतोला नेबो अर्को अग्नि ई त अहाँ अपनहुँ पढ़ने हैब तँ यदि एहि गोख पदार्थ क सब सँ उमरल भाग कें चारुकात सँ सूत ल लपेटल जाइ त २४८०८ मील सूत क जरूरत हएतैक और यदि एक लोहा क छद्द पेट में भोंकल जाइ त ७६१३ मील लम्बा छद्द एहि पार सँ ओहि पार तक हैतैक।

पृथिवी क गर्भ सँ तरह-तरहक पदार्थ, जेना कोयला, लोहा, नोन, रसायनिक पदार्थ आदि बहराइ छै। पृथिवी क गर्भ क हालत जनै लेल एकटा यन्त्र होइ छै जकरा सीसमोप्राफ कहल जाइ छै। पृथिवी क भीतर बहुत दूर तक एखनहुँ मनुष्य नहि जा सकल अछि। सबसँ गहीर खान खानी सवा मील (मारोबेलहो, बाजोल, ६४२६ फीट) छै। ई दूरी जखन एहि पार सँ ओहि पार क दूरी ७९१३ मील छै कतेक कम छो से अहाँ स्वयं अनुमान करू। पृथिवी क तर में फीटु सौ फीट पर एक डिग्री (फ) गरमी बढ़ि जाइ छै।

पृथिवी बहुत तरहक तह सँ बनल अछि। सबसँ नीचुलका तह, जे सब सँ घन छै (पानि सँ ५॥ गुन घन) लोहा और निकेल धातुक छै। तै सँ ऊपरका एक तरहक पाथर बसाल्ट चट्टान क छै और ताहू सँ ऊपरका चट्टान और पाथर क छै जकरो में कैएक तरहक भेद छै।

पृथिवी क तौल प्रायः १७० हजार संख मन छै।

पृथिवी क ऊपर में वायुमंडल छै जे करीब दू सौ मील मोट खोल जहाँ पृथिवी कें चारुकात सँ घेरने छै। बसातो

(वतावरण) तौल होइछै और ओ तूर क ढेर जहाँ क्रमशः ऊपर में हल्लुक भ गेल छै। बसातक भार क तौल बेरोमीटर नामक यन्त्र सँ होइछै। १२ हजार फीट ऊपर में बहुत कम मेघ रहै छै। २० हजार फीट ऊपर में कोनों अन्धड़-बिहारि नहि रहै छै। एहन जगह में हवाई जहाज कें उड़वा में आसान होइछै मुदा एतेक ऊँच स्थान में बसातक एकदम अभाव में उड़मे कठिन भ जाइछै।

हमरा लोकनिक पूर्वाज पृथिवी कें 'अचला' जे चलए नहि, कहै छलखोन्ह किन्तु यथार्थ में पृथिवी चलमान छथि और पृथिवी केर दू टा गति छैन्ह। एकटा दैनिक-रोज पृथिवी करीब २४ घंटा में अपन कोल पर घूमि जाइ छथि। अही घुमनाई में जे हिस्सा सूर्यक सम्मुख रहै छैन्ह ततए दिन और जे परोक्ष में, ततय राति रहै छै।

पृथिवीक दोसर चालि, जाहि सँ पृथिवीक अपन कक्ष पर $365\frac{1}{4}$ दिन में एक बेरि सूर्यक चारुकात घूमि जाइ छथि। एहि गति सँ दिन-राति पैघ वा छोट और ऋतु परिवर्तन होइ अछि। पृथिवी अपन कक्ष पर ६५ हजार मील प्रति घंटा और कोल पर $9080\frac{1}{2}$ मील प्रति घंटा क चालि सँ चलै छथि।

पृथिवीक आयुक्त पता से हो लोक लगौलक अछि। समुद्र क पानि मोनगर होइछै कारण, नदी, पृथिवी सँ धोखारि २ नोन समुद्र में ल जाइ छै। सम्पूर्ण समुद्र में कतेक नोन छै और ओतेक नोन कें लएवा में कतेक वर्ष लागल हएतैक एहि सँ

लोक पृथिवीक आयु क पता लगौलक। मुदा एहि तरीका में भ्रमक बहुत गुंजाइश छै कारण समुद्र और नदी क आयु तथा नदी प्रतिवर्ष कतेक नोन अनै अछि ई ठीक सँ जानब कठिन छै। दोसर तरीका बट्टान सँ पता लगाएब अछि किन्तु ओहो भ्रममूलक अछि कारण प्रतिवर्ष कतेक माटि क कैकटा तह जमै छै से ठीक २ बुझब कठिन। तेसर तरीका रेडियो क्रिया वाला धातु, जेना रेडियम डेरानियम क स्वतः दूटवा क हिसाब पर छै। एह तरीका बहुत ठीक छै जाहि सँ पृथिवी क आयु दु अरब वर्ष होइछै।

पृथिवीक जन्मस्थान कतऽ छैन्ह और कोना जन्म भेलैन्ह ई एकटा बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न थोक। दुनिया क श्रेष्ठ विद्वान लोकनिक विचार छैन्ह जे सूर्य क लग सँ एक समय में एकटा तारा चल जाइत रहए और ओकरे चिचैला सँ सूर्य क एक भाग सिंगार क आकार सन छूटि क फराक भ गेलैन्ह। फेरि ओ सिंगार कै हिस्सा में बटि गेलैक और ओहि में एक टा तेसर टुकड़ा पृथिवी छी। ई दूटल टुकड़ा सब एखनहुँ तक सूर्य क चारुकात परिक्रमा कए रहल अछि और देखवा में सिंगार जकों दुनू छोर पर पातर, बीच में बभड़ल छै।

शुरु में पृथिवी गैस क ढेर रहए और प्रायः पाँच हजार वर्षक बाद तरल पदार्थ भ गेली और तकर दस हजार वर्षक बाद ठोस भ गेलीह। पहिने पृथिवी पर कोनो जीव-जन्तु नहि रहए। समूचा पृथिवी बालु भरल अतए-ततए दरारि काटल, जाहि में सँ बट्टान सब पधलि-पधलि अलकतरा

जकों बहराइत रहए और ऊपर आकाश मेघ सँ भरल रहए। अदिखन वर्षा होइत रहै। ओहि दिन चन्द्रमा सूर्य से हो प्रायः पृथिवी पर नहि सगैत रहथि। बाद में पृथिवी क्रमशः ठंडा होइत गेल और कालक्रमे जीव-जन्तु क बसै योग्य भ गेल।

दोसर वस्तु जकरा हमरा लोकनि नित्य देखैछो ओ थोकाह सूर्य। सूर्य पृथिवी सँ १३ लाख गुन पैघ छथि मुदा ओ हमरा लोकनि सँ ९ करोड़ ३० लाख मील दूर पर छथि तँ ओतेक छोट बुझाई छथि। सूर्य में ततेक गर्मी छैन्ह (ऊपर तह में ६०० डिग्री और भीतर में ५ करोड़ डिग्री) जे सब वस्तु लोहा और स्टीनस सन कड़ा वस्तु गलिए टा नहि जाइ अछि, गैस भ जाइ अछि। सूर्य में सँ प्रति सेकेंड १४ करोड़ मन गर्मी बहराइ छैन्ह जाहि सँ सूर्य एक दिन चन्द्रमा जकों ठंडा भ सकै छलाह किन्तु दोसर कारण सँ (हाइड्रोजन क भिन्न २ परमाणु में बदलवा क कारण) सूर्य करीब साढ़े पैंसठि लाख वर्ष में फेरि ओहि गर्मी कए हासिल कय लै छथि। सूर्यो पृथिवी जकों अपन केन्द्र पर ६७ हजार मील प्रति घंटाक चालि सँ दौड़ै छथि।

तेसर वस्तु जकरा सँ हमरा लोकनि पूर्ण परिचित छी ओ थोका चन्द्रमा। चन्द्रमा आकाशमें हमरा लोकनि सँ सबसँ लग छथि और तएँ सब सँ छोट होइता (पृथिवी सँ ५० गून छोट) ओतेक टा बुझाई छथि। दूरबीन सँ चन्द्रमा परहक पहाड़, ज्वालामुखी आदि केँ हमरा लोकनि आसानी सँ

देखि सकै छी । चन्द्रमा ततेक ठंढा भ गेल छथि जे आब ने ओत मेघ छै ने नदी, ने समुद्र और ने छै हवा ।

ज्योतिषी सब टिपनि में जाहि सब ग्रहक नाम कहै छथि ओ सब नित्य आकाश में चगैवाला तारा सब छथि । दू-तीन टा ग्रह जेना प्लूटो, नेपचू, एरोस आदि क पता ज्योतिषी लोकनि कें नहि रहैन्ह । विद्वान लोकनिक अनुमान छैन्ह जे एहन एहन ग्रह आकाश में गोटेक दर्जन और छथि जकरा हमरा लोकनि यन्त्र सँ देखि सकै छिऐन्ह ।

अधिक काल राति में अहाँ दूटैत तारा कें खसैत देखैत हैबै और से देखि पाँच ब्राह्मण, फल, कुमारिकन्या क नाम लैत हैब मुदा असल में ओ तारा दूटि कए नहि खसैत रहै छै । जखन आकाश महक कोनो पिंडक अंश पृथिवी वा अन्य पिंड जे ओतेक टा और ओतेक झोंक सँ घुमै अछि खिचा जाइ छै त ओकरा हवा सँ टकराए पड़ै छै-जाहि सँ ओ जरैछ और ताहि सँ प्रकाश भ जाइ छै । अही जरै में ओ साक भ जाइ अछि और पृथिवी तक नहि पहुँच पवै अछि । गोटेक घेरि पृथिवी पर चलो अबै अछि ।

आकाश में एक टा चीज जे सब राति देखै छिऐ ओ थोक तारा । उत्तर, हस्त, चित्रा आदि सत्ताइशो नक्षत्र तारा थिका । ई सब एक ने एक समय में आकाश में चगै छथि । तहिना बारहो राशि जेना अहाँक जन्म राशि कन्या अछि तारा थिका जे आकाश में चगै छथि और जाहि समय में अहाँक जन्म भेल ताहि समय में सब साल चगै छथि जकरा अहाँ देखि सकै

छिऐ । ई सब तारा देखैत एतनो टा लगे छथि मुदा 'कैकटा पृथिवी सँ करोड़ २ गुन पैघ छथि । जखन रोशनी एक सेकेण्ड में १८६ हजार मील चलै अछि तखन सब सँ लग क तारा क रोशनी कें हमरा लोकनि लग अबै में ४ वर्ष लगे छैन्ह । जाहि ध्रुव तारा कें अहाँ कए व्याहक राति में देखाएल गेल से यथार्थ में अहाँक जन्म सँ १६॥ वर्ष पहिलुके ध्रुव रहथि कारण, ध्रुव क रोशनी कए अहाँक लग पहुँचै में ३६॥ वर्ष लागि जाइ छै । अन्हरिया राति में आकाश में किछु दूर उत्तरे-दक्षिणे खूब सघन तारा देखैत हएबै जाहि सँ ओ हिस्सा एकदम प्रकाशमय बुझि पड़ै छै और ओ धार जकों बुझि पड़ै छै ओकरा 'आकाश गङ्गा' कहल जाइ छै ।

आब अन्दाज करियो जे विश्व कतेक टा छै । कतेक फैलल छै ! मुदा एते टटा तारा, सूर्य कथी पर अड़कल छथि, एकर किछु अड़कन छैन्हि की नहि ? विना अड़कने कोने चीज केना रहतै ? ई जतेक तारा, सूर्य, पृथिवी वा चन्द्रमा देखै छिऐ सब आकाश में खूब जोर स दौड़ि रहला अछि । एतेक टटा ग्रह, तारा सूर्य जखन ओतेक बेग सँ घुमै छैन्हि त हुनकर झोंक सँ सबहक गति टेढ़ अंडाकार भ जाइ छैन्हि जेना चलैत रेलगाड़ी सँ केओ सोफेसोफ नहि कुदि सकै अछि । बेगक झोंक सँ ओ टेढ़ भ जाएत । अही झोंक पर सबहक सबके खिचाबट पर सब निरन्तर घूमि रहल अछि, अड़कल अछि ।



(२)

पछिला चिट्ठी में लिखने रही जे ई विश्व कोना अनन्त अछि और पृथिवी क जन्म कोना भेलै। पृथिवी जखन एतवा ठंढा भ गेली जे ओहि पर जीव-जन्तु रहि सकय तखन ओ घघकैइत पिंड सँ ठोस भ गेल छल और भाप सब पानि बनि दिन-राति सुखलाधार वर्षा होइत छल। अही अतिशय वर्षा सँ पृथिवी पर झोल और महासमुद्र सब भ गेल। अही पानि में ओहि सब पदार्थ क जे जीव क लेल जरूरी छै भाव-इयक रीतिक मिश्रण सँ प्रथम जीव क सृष्टि भेल। ओना तँ सूक्ष्म दृष्टि सँ ई कहब कठिन अछि जे कोन जीव छो और कोन निर्जीव तथापि पहिल जीव जे दुनिया में भेल ओकरा लोक 'आमोयबा' कहै छै। ई पानि में एक धून्द् तेल जकाँ रहै छल और पानिए में मिलल नोन और कार्बन द्विओषिद् बा पहने और पदार्थ ओकर भोजन छलै। ई जीव एक कोशिय बा एके सेलवाला होइ छलै। पानि में बहुत दिन रहलाक बाद ई स्वतः दु हिस्सा में बँटा जाइ छलै। अही तरहक जीव में सँ दू वा शाखा बहरै लै। एकटा सँ गाछ बिर्छ भेल दोसर सँ जानवर। ई भेद कोनो एक दिन या एके वर्ष में नहि भेलैक। एकरा में हजारों वर्ष लगलै जाहि में क्रमिक विकास होइ छलै।

अहाँ सँ यदि केओ सवाल करए जे पहिने अंडा भेलै की

परवा तऽ अह कठिन में पड़ि जाएब। जौ कहवै जे पहिने अंडा भेल तऽ बिना परवे अंडा हएतैक कोना और यदि पहिने परवा भेल तऽ बिना अंडे परवा कोना भेलै ! किन्तु जीवन विज्ञान केँ जागैवाला वैज्ञानिक लोकनि एहि बात केँ खोज कएलैन्ह अछि जे सर्व प्रथम जीव क जन्म भेलाक बाद कोना सहसा और क्रमिक विकास होइत गेल। एकरा पता लगवै में हुनका दुनिया क विद्यमान चीज सँ मदद भेटलैन्ह अछि। ओ कोनो अपरिवर्तनशील परम ब्रह्मक स्वरूप सँ नहि भेलैन्ह। पहिलुका चिट्ठी में लिखने रही जे पृथिवी कोना भिन्न-भिन्न तरहक चट्टान सँ बनल अछि और पहि सब चट्टानक कोना सृष्टि भेलैक। ओहि चट्टान क तह केँ फोलला सँ ओहि में तरह-तरह क जीव-जन्तु क चिह्न भेटै छै। जाहि समय में पृथिवी क समुद्र में आदि जीव सब बनि रहल छलै ओही समय धोखारल माटि-बालु आदि सँ समुद्र भरल सेहो जाइ छलै और कहियो २ भूकम्प सँ इएह सब ऊपर उठि अबै छलै। अही तरीका क सामुद्रिक या बाहरी चट्टान में तरह तरह क जीव-जन्तु पीचा जाइ छल। वैह भरल पिचायल जीव सब पथरागेल छै जाहि कारण सँ ओ चिन्ह ओहिना बनल छै। अही पथरायल चिन्ह सँ बहुत बात क पता लगैछ। एहि चट्टान केँ देखला सँ बुझाई छै जे सब सँ पुरना चट्टान (PRECAMBRIAN) में कोनो तरहक चिह्न नहि छै। तकर बाद क चट्टान (CAMBRIAN) में सब सँ प्राचीन गाछ और जाँवक चिह्न छै। भिन्न-भिन्न विशेषतावाला जीव जन्तु भेटै

छै जेना सिलुरियन काल में पीठ क रीठ वाला हइयो या भीम-काय शरीर जखन एकटा गिरगिट सन जानवर १०-७० हाथ क होइ छलै। बाद में फेरि एहन जीव भेलै जे बघा कएँ दुध पियाबै अछि।

आइ सँ दस लाख वर्ष पहिलुका स्तर में वन-मानुष सन जीवक चिह्न भेटैत अछि। इएह वन-मानुषक विकास होइत २ आइकाल्हिक मनुष्य भेल। जीवक स्वभाव छिपे जे अपन चारुकात जेहन स्थिति रहतै ओही में रहैक ओ अभ्यास करत। अहाँ बेग देखै छिपे ओ पानियो में रहै अछि और जमीनो पर। एकर मतलब जे जखन पृथिवी सुखाए लागल तखन जीव कोशिश कएलक जे पानि-माटि दुनू ठाम रही। ओही तरहें चिड़ै जे आकाश पानि-माटि तीनू ठाम रहै अछि।

यूरोप में डार्विन नामक एक वैज्ञानिक आइ सँ करीब दु सौ वर्ष पहिने भेला जे अपन किताब “मनुष्यक अवतार” में विश्वस्त प्रमाण सँ सिद्ध कएलैन्ह अछि। विकासक चोड़दौड़ में कोना बानर, वनमानुष और मनुष्य आएल। मनुष्य और वनमानुष या बानर क शरीरक बनावट में बड़ कम अन्तर छै। साधारण रूपक समानता तऽ अहाँ अपनहुँ देखि सकै छी। एहनो बानर होइछ जकरा नजरि नहि होइ छै। मनुष्यक शरीर में यदि बानरक शोणित क सूई देल जाइ छै तऽ कोनो खराबी नहि करै छै। किन्तु सब सँ मुख्य बातक फर्क जे मनुष्य और बानर या वनमानुष में छै ओ सोचवाक शक्ति। मुदा ई फर्क व क्रमिक विकासक प्रमाण छी।

मुदा एहि सब बातक ई अर्थ नहि जे कोनो बानर कें वा वनमानुष कें कोनो दिन आइ-काल्हिक मनुष्य सन बेटा भ गेलै। कथमपि नहि। एहि तरहक विकास में लाखो वर्ष लगलै। आइ जाहि रूप में मनुष्य कें देखै छिपे लाख वर्ष बाद भ सकै अछि जे ओहि रूप में एकदम परिवर्तन भ जाइ।

आब अहाँ अन्दाज क सकै छी जे हमरा सबहक धर्मशास्त्र में जे कहल जाइ अछि जे ८४ लाख योनि अछि, भूठ छी। कारण, एहि ठाम नित्य नव नव तरहक योनि या जीव जन्तुक सृष्टि होइ अछि। अहाँ यदि बाढ़ो-भाढ़ो नली महक कोड़ा सब दिस ध्यान सँ देखबै तऽ बुझै में आएत जे किछु नव तरहक कीड़ी क जन्म होइ छै और किछुक रूप में क्रमिक परिवर्तन स्थान या समय क्रम सँ भ रहलै अछि। ओही तरहें कोनो खास तरहक कीड़ा एकदम नापता भेल जाइ छै। एक दिन हम अहाँ कें कहने रहो जे हाथी क वंशक कोना नाश भ रहलै अछि और बहुत सम्भव छी ५ सौ वर्षक बाद हाथी क सर्जनश भ जाइ। कतेक एहन जीव अछि जे एक दिन हाथियो क हाथी छल मुदा आइ ओकर अस्तित्व साबित करै लेल बहुतो विद्वान कएँ माथापन्नी करए पड़ि रहलैन्ह अछि।

अहाँ कएँ एखनहुँ विश्वास नहि हैत जे अपने स अपने कोनो जीवक जन्म कोना हएतैक। उदाहरण लए हम अहाँक मायक डीलक कथा कहै छी। अहाँक माय में डील कतऽ सँ आएल? कोनो जरूरी नहि छै जे कोनो एहन लोक सँ पटौने होइ जकरा माय में डील छलै। माय में मइल रहला सँ पानि

कें हवा-रौद क अभाव में लगला सँ डोल स्वयं फड़ै छै ।
 आँगन क छूतहर में यदि पानि बहुत दिन तक पड़ल रहि जाए
 त ओहि में अपनहु कीड़ी फड़ि जएतैक विन अँडा-बच्चा या
 बुढ़िया देने । ओही तरहें पृथिवी पर स्वयं जीव क जन्म
 भेलैक । हॉ, एक बेरि जखन ओहि तरहक जीव उत्पन्न भऽ
 जाइ छैक तखन फेरि स्त्री-पुरुषक संयोगे सँ जन्म हएवाक
 सिलसिला बनि जाइ छै और ओहू में तरह तरहक परिवर्तन
 तथा विकास होइत रहै छै । हम एक दिन अहाँ कें कहने
 रही जे कोना एक (सेल) कोशिय जीव क सन्तान विन बापक
 से होइ छै ।

आब अहाँ बुझि सकै छिये जे एहि सृष्टि क रचना में कोनो
 भगवानक हाथ नहि छैन्ह स्वतः स्वाभाविक नियम पर ई सृष्टि
 बनै छै और विनाश होइत रहै छै ।



(३)

गिरीडीह

१६-८-४८

एहि चिट्ठी में लिखै छी जे जखन मनुष्य क अवतार भेलैक
 तखन मनुष्य समाज क विकास कोन रूपे भेल । पहिने क
 दुनियाँ जंगल सँ भरल रहए । एखन जे घर-आँगन, खेत-
 खरिहान अहाँ देखै छिये से सब जंगलमय रहै । मनुष्य ओहि
 जंगल में नंगटे रहैत रहए । कन्द-मूल खाए-पानि पीवए शिकार
 कए जानवर क काँच मौँस सेहो खाए । शिकार खेलाइ
 लेल पाथर क तेज हथियार बनाबए । जेना जंगल में वानर
 रहै अछि निर्विकार तहिना मनुष्यो रहैत रहए । बाद में
 बन-आगि में भरकाए मौँसु सेहो खाय लागल । नोन क
 पता बहुत बाद में लगलै । सोभे जंगल में सुतने बाघ-बिह
 क डर रहै तँ मनुष्य भुन्ड बान्हि-बान्हि आगि लग या पानि
 में मचान बान्हि कए ओहि पर सँ खोपड़ा बान्हि क रहए ।
 नदीक कात में मनुष्य अधिक रहए कारण ओतय कन्द-मूल
 फल-फूल तऽ भेटबे करै संग संग माछ मौँसु सेहो अधिक भेटै ।

मनुष्य खेतो-पथारी किछु नहि जनैत रहए । बाद में
 जखन मनुष्य देखलक जे जखन कोनो फल खा क ओ फेकि
 दे छै त ओकर गाछ भऽ जाइ छै और फेरि ओहि गाछ में

ओहने फल करे छै तखन मनुष्य कएँ खेतोक ज्ञान भेलैक। तखन ततेक परता खेत ने दुनिया में रहे जे मालगुजारी या खेत विकेबाक कोनो बाते नहिं रहै। जंगल काटि क लोक खेत बना लिए। जखन खेती कर लागल तखन “जतहि धर ततहि घर” बन्द भ गेलैक लोक एक ठाम घर बान्हि क रहए लागल। खेती करै लए वा मौसु खाइ लए जानवर पोसाए लागल। मनुष्य जत रहै एक कुंड में वैह कुंड जखन बसि गेल तखन टोल या गाँव भ गेल। सम्पूर्ण कुंड कोनो खास मुनिक नाम पर प्रसिद्ध भ गेल जे सम्भवतः ओहि कुंड क “गोत्र” और आहि जगह में ओ कुंड रहए ‘मूल’ क नाम सँ प्रसिद्ध भ गेलैक। एहि कुंड सब में एक कएँ दोसर सँ आपस में मारि होइ। दुनु कुंड आपस में खूब लड़ए और जे हारि जाए वा लड़ाई में पकड़ल जाए तकरा स दोसर कुंड गुलामी करवावै। कुंड में लड़ाई चलेवा लेल, आश्रम संहारवाक लेल एक टा क सरदार चुनब जे खूब होशियार हो, पहलवान हो जरूरी भ गेलै और ओहि कुंडक नाम सरदार क (मुनि) नाम पर रह लगलै। अही कुंड क (Geus) नाम कें गोत्र कहै छै जेना शॉडिल्य, भारद्वाज, काश्यप आदि गोत्र।

एहि कुंड में पहिने केओ छोट पैघ नहिं रहए, सब बराबर। सब केओ मिलि क खेती करए और जे उपजे से आप तहिना जंगल सँ शिकार मारि कए आनए और सबकेओ इच्छापूर्णा खाए। ने खेत बाँटल रहै और ने उपजे बाँटल

जाइ। कोनो आचार-विचार नहिं रहै। व्याह नाम क चीजे नहिं रहै। के ककर बेटो-बहु-भौजी या बहीन छिए से यूभक्त कठिन मुदा थोड़वे दिन बाद समाज में एकर विभेद हैब शुरू भ गेलैक।

कुंड क जे सरदार या मुनि रहथि तनिकर लोक बड़ मान-प्रतिष्ठा करैन्ह। लोक हुनक बल-पराक्रम सँ प्रभावित रहए। मुनि समदर्शी होथि—भोजन-समाज क बाँट या और कोनो तरहक चीज में गड़बड़ी नहिं होम-देथीन्ह। अपन मधुर स्वभाव सँ ओ सर्वप्रिय और सर्वमान्य रहथि। स्वभावतः लोक हुनका मुइलाक बाद हुनकर पूज्य चिह्न राख लागल। ओकर प्रणाम-पूजा आदि करऽ लागल। बहुत दिन वितलाक बाद इएह लोकनि कुलदेवता या मंकारबाबा ब्रह्म भ गेलाह और लोक दिनकर कोनो विशाल पोपर या वड़क गाछ तर पोड़ी बनाक पूजा कर लागल। मनुष्य कएँ एहि समय में ई ज्ञान नहिं रहै जे वर्षा किये होइ छै। पाथर किये खसै छै। बिजली किये चमकै छै मेघ किये गरजै छै वा आगि कोना बनै छै ? दोसर आगि-पानि-पाथर आदिक आकस्मिक और अनियमित हमला सँ मनुष्य समाज क दिमाग में डर पैसि गेलैक और ओ एकटा देवता बुझि डराए लागल। अग्नि, वरुण, इन्द्र आदि सब देवता भ गेलाह।

जखन वर्षा नहिं होइ तखन वरुण या इन्द्र देवता कें खुशी कर लए हुनकर पूजा, नाचगान, कबुला-पाति करए और जौ बड़जोर बाढ़ि आबि जाइ तऽ कमला कें सौम्य दैन्ह,

तन्मात्र चदवेन्द्र । बाद में जों जों मनुष्य करें एहि सब वस्तु क वास्तविक और व्यवहारिक ज्ञान होइत गेलैक एहि देवता लोकनि सँ छुटकारा पावए लागल । केओ कहऽ लगलै से एक ठा भगवान छथि त केओ ओहो नहि । जों केओ कहै जे एकोठा भगवान नहि छथि त दोसर कहि उठै जे बिना कर्ता कएँ ई दुनियाँ बनलै कोना ? तेसर कहै जे यदि सब चीज क लेल वनैनहारक जरूरीये छैक त भगवानो क वनैनहार केओ अवश्य हएतैन्ह—बापो क बाप तकरो बाप..... । केओ आवि सवाल करै जे पहिने गाछ भेल की बीया ? विन गाछे बीया हेत कोना और बीयो गाछ कोना हएतै ? मुदा ई सब तर्क और दर्शन क लड़ाई त बाद में चलत । पहिने यथार्थ में मनुष्य कएँ भय और अज्ञान क कारण देवता, ब्रह्म और भगवान क भावना भेलैक जे एखन तक नेगड़बघैत चलत अवे छै !

तऽ फेरि समाज में माए-बहीन, भाउज-भावहु आदिक विभेद कोना भेलैक और आचार-विचार क सृष्टि कोना भेलैक । पजियार अधिकारमाला कोना बनवऽ लगलाह । पहिने समाज में व्याह नामक प्रथा नहि रहै । बाद में जखन वृद्ध और जवान में युवता लए मारि होमऽ लगलै तखन मुनि लोकनि फैसला कएलैन्ह जे बेटी क बाप संग अनधिकार छी । तकर बाद सहोदर भाए-बहिन में और फेरि छोट भाए क स्त्री क संग पैस क सम्बन्ध आदि अनधिकार घोषित कएल गेल । भावहु क संग जे छुति तक मना छै तकर खास कारण इपह छै जे छोट-पैस भाए में अवस्था क कम अन्तर हएवाक

कारण सब मारामारी होइत रहै और मनुष्य समाज बहुत खून बहेलाक बाद एहि निश्चय पर पहुँचल । पहिने त एक ठा स्त्री कएकटा पति राखए जेना द्रौपदी जनिकर भोरे उठिकए अहाँ नाम लै छिएन्ह । कुन्तो, तारा, मन्दोदरी, अहिल्या आदि सब आजुक आचार-विचार क नाप सँ कुकर्मीए रहथि । आचार-विचार समय बदलला सँ या समाज-व्यवस्था या सबहक जदि उत्पादन क साधन क बदलला सँ बदलि जाइ छै । एक दिन रहै जे पाँच स्वामो रखितौ लोक ओकर पूजा करै, बाद में परमुख देखबा सँ ओहि फोड़ब नीक मानल गेलैक । ओहि समय में समाज में माउगि क प्रधानता रहबे करै । यदि केओ द्रौपदी या कुन्तो केँ कुकर्मी कहितैन्ह त ओकरा फाँसिए पर लटका दीतथिन्ह । मंकारनाथ पंडितजी तऽ एखनहुँ सरकार केँ तकरे सलाह देथीन्ह । खेती जावत तक दुनियाँ में नहि आएल रहए तावत तक समाज में पुरुष सँ स्त्रीगणे क बेसी प्रधानता रहै कारण, माउगि लड़ाई, शिकार वगैरह काज में पुरुष सँ तऽ एको रत्ती कम नहि रहए, संग-संग ओ घरनीयो रहए । मुदा जहिया सँ खेती आएल और माउगि खाली चुल्हे फुके में लागि गेल (खेती क बाद घर क काज बहुत बढ़ि गेलैक) तहिया सँ स्त्री वर्ग क धाक समाज में खतम भ गेलै और पुरुष क राज भ गेलैन्ह । खेती क असल काज तऽ पुरुषे करए तखन माउगिक कोन खुशामद ! आब त जेना शहर में सवारी भाड़ा पर भेटै छै तहिना माउगियो । एतेक जे माउगि समाज में खलि पड़ल तकर एकमात्र कारण जे ओ स्वावलम्बन छौड़ि

देखक। जखन पुरुष क समाज पर अधिकार एकछत्र राज म
गेलैक तखन ओ जे टा मोन फुरै बिआह करअ लागल।
अबारा कृष्ण सौंद १६०० माउगि राख लागल मुदा सोलहो
हजार सँ एक रंग प्रेम त केओ निबाहिए नहिँ सकै छल तँ
एक गोटा सँ बहुत प्रेम होम लगलै जेना राधा-कृष्ण क।
बाद अही सँ एकांगी प्रेम, एक पत्नी जीवन चल लगलै मुदा
ई प्रथा त असल में पूंजीवाद क जमाना में आइकानिह
भेलै अछि। सामन्तशाही जमाना या रामराज्य में लोक
बीस बीस टा ब्याह करै छल। अही तरहें जे किछु आधार-
विचार क “उत्तम विचार” अहाँ देखै छिये तकर सृष्टि संघर्ष
होइत-होइत अनुभव क आधार पर भेलैक अछि।

अहाँ पुछब जे अच्छा, त फेरि जमीन क बँटवारा, राजा-
प्रजा धनीक-गरीब कोना भेलैक ?

हम पहिने कहलहुँ अछि जे मनुष्यक जगह-जगह झुंढ
रहैत रहै अकर एकटा क सरदार लोकक चुनल रहै। ओ
सरदार जखन मरि जाथि तखन हुनकर आदरक ख्याल सँ
वा हुनकर कहल जे “हमर बाबू हमर बेटा कें सरदार चुनि-
यहुन” मानि क लोक सरदार क बेटा कें सरदार चुन लागल।
क्रमशः इएह रिवाज चलि गेलैक जे सरदार क बेटा सरदार
हुए और फेरि कालक्रमे वैह आराम तलब और निरंकुश राजा
या जागीरदार बनि गेलैक। दोसर बात ई भेलैक जे झुंढ
झुंढ में जे लड़ाई होइ और ओहि में जे आदमी पकड़ल जाइ
तकरा सँ जोतल झुंढ गुलामी करबावै, ओकरा खाइ लए

त वै रुख-सूख जैह सेह मगर बरद जकों कमबावहि। एहि
गुलाम कें ओ मालिक जान सँ मारि दै छलै तैयो एकरा खेद
कोनो दर्ज नहि। मालिक गुलाम खरीदतौ-बेचै छल।
गाए-महीस जकों ककरो दैओ सकै छलै। समाज में धनीक-
गरीब, शोषक-शोषित क सर्व प्रथम वर्ग-विभेद एतहि सँ शुरू
भेल। गुलाम कमेनिहार और मालिक खेनिहार। मालिक
अपन आरामतलब जीवन बितावए, भूखल गुलाम बरद जकों
बहए। बाद में जगह-जगह गुलाम और मालिक में एहि
पशु-जीवन क अन्त क हेतु भयंकर लड़ाई होम लगलै। सब
गुलाम मिलि क मालिक पर हमला क दैन्ह और मौका पावि
जानो मारि दैन्ह। दोसर मालिक कें सेहो गुलाम कें खुएबा
पिएबा, ओकर बाल-बच्चा सबकएँ गुजर जैह-सैह करवा में
बड़ खर्च पड़ि जाइ तखन मालिक सब दोसर उपाय बहार कैलक
खेत बहिया कें जोतै लै द देलकै और कहलकै जे तौ खेत
जोति क खो और ओकर बदला में हमरा मालिगुजारी दे।
हमर काज धंवा कऽ दे, ओहि तरहें बटैया चलऽ लगलै।
मालिक केर जे जमीन अपन रहै तकरो बेगारी, हरि-हर आदि
सँ जोतवा जिये। कहबाक मतलब ई जे बहिया-मालिक समाज
क बाद सामन्तवाद या रैयति राजा क जमाना आएल।
यद्यपि रैयति कें राजा या जागीरदार पखनहुँ सतेबे करै तैयो
बहिया क तुलना में रैयति स्वतन्त्र जीवन बितव लागल याने
शोषण क तरीका बदलि गेलैक। जागीरदार के जे एहि
तरहे लोकक खून चुसि चुसि रुपैया अबै तै सँ ओ रंडी नचावै

धोबी राखए (वैह किसानक रूपैया मुएत में मालगुजारी तरे ल क ओही किसान क सुन्दर बहु-बेटीक इज्जति से वैह रूपैया द क) बेटी-बेटा क उपनयन, बियाह आदि में डेर रूपैया खर्च करए, उड़ावए जाहि सँ समाज क कोनो चन्नति नहि हो। आस्ते आस्ते समाज क ई हाल भ गेलै जे परिवार बढ़ला सँ जमीन छोट छोट कोला में बँटि गेलैक। जमीन में एते उपजा नहि होइ जे किसान अपन परिवार क गुजर क सकए चले ओकरा अपन कमाई में सँ मालगुजारी-सलामी नजराना-जुर्माना आदि जमींदार कें पहुँचावए पड़ै। जे केओ ई सब नहि दै तकर जमीन छिना जाइ। जे खेत पहिने जंगल रहै और ओकरा काठ क जे खेत बनौलक तकरे धिया-पूता के मालगुजारी चुकब पड़ै और नहि चुकोला सँ छिनाए लगलै। अपने बाप-दादा क चुनल सरदार क धियापूता आइ ओकरा पर जुल्म कर लगलै। फेरि इएह सब सरदार मिलि कए एक राजा चुनि लिए या कोनो सरदार अपन पराक्रम सँ दश-बीस सरदार कें जीति क चक्रवर्ती राजा कहावै। ओही राजा क दरबार में पंडित रहथि जे शास्त्र बनावथि जे ई तऽ पूर्व जन्म क कमाइ छिपे जे राजा राजा और गरीब गरीब होइछ। लोक कें राजा कें बाप तुल्य मानवाक चाहि (पंडित जी साथि तऽ राजा क अन्न, तखन यदि तरफदारी नहि करितथीन्ह व राजा निकालिए दोतैन्ह)। और पंडितजी कह्योन्ह, खूब दान करअ। सोना दान करअ (तोरा बड़ कें गहना बनबै लए) व अगिला जन्म ओहिना सोना भेटतऽ

(एहि जन्म हमरे सबटा सोना लेब दीअ, अगिला जन्म अहाँ, लेब पंडितजी, ब्राह्मण कें दान देला सँ बड़ धर्म होइछै (सब पंडित व ब्राह्मण रहथि) खूब ब्राह्मण-भोजन करब (तोरा इलुआ-पूरी खुभबै लए, पेटमधबा!) एहि तरहें तरह-तरहक भ्रमजाल ई लोकनि शास्त्र में रचलैन्ह लोक क संस्कार और ज्ञान कें बान्हि रखबा लै। एक तरफ राजाक फौज दोसर तरफ पंडितक भ्रमजाल में बड़ि कमेनहार लोक जीह अहाँ दोतरफा दौत क बीच पड़ि "ब्राहि, ब्राहि" करै छल मुदा जेना दौत भड़ि जाइ छै और जीह रहिए जाइछै तहिना एक दिन ई दौत सब भरि जेताइ।



(४)

गिरिखोह,
१८-८-४८

परसूका चिट्ठी में लिखने रही जे दुनिया में कोना कोना खेतो बाड़ी शुरू भेलै, कोना समाज में धनीक-गरीब क सृष्टि भेलैक-पहिने कोना सब बराबर रहैत रहए तखन फेरि कोना "बहिया" और "मालिक" इ दू वर्ग क जन्म भेलै और फेरि कोना "रैयति" और "राजा" क जमाना (सामन्तवादी काल) आएलै। यदि ओहि चिट्ठी के फेरि एक बेरि मोन द कऽ पढ़ै त देखबै जे पहिने जखन आदमी शिकार वा फल मूल पर गुजर करै छल तखनुका समाज क बनावट एकदम भिन्न, दोसर तरहक छलै, आचार-विचारक नियमो भिन्न छलै, सामाजिक मान्-प्रतिष्ठा बगैरह एकदम भिन्न छलै। फेरि बहिया-मालिक क जमाना आएलै समाजक ढाँचा, रहन-सहन एकदम बदलि गेलैक। फेरि जखन रैयति-राजा क जमाना आएलै समाज क ऊपरी बनावट एकदम बदलि गेलैक। मतलब ई जे जखन-जखन जीवन-निर्वाहक तरीका में फेर-बदल भ गेलैक समाजक ऊपरका ढाँचा, रहन-सहन, आचार-विचार, धर्म, मान-प्रतिष्ठा आदि सब में समयानुकूल फेर बदल भ गेलैक। एक दिन बहिया फल-मूल पर जीवन निर्वाह होइत रहै—खी-

पुरुष सब बराबर रहए—विवाह नामक चीजो नहि रहै—पुरुष सँ बेसी अधिकार खीगण क समाज में रहैन्ह। दोसर जमाना खेतोक आएलै—माछगि घर ओगरय लागलि—समाज में पुरुषक घाक बढ़ि गेलैक—आब पुरुष क जतेक मोन हुऐ व्याह करए। मुदा जौ जौ समाज आगू बढ़ैत गेल व्याह संबंध तौ तौ दूर क लोक सँ जेना एक गोख में नहि, तऽ दोसरो गोख क संबंधी वर्ग में नहि हो निश्चित होइत गेल। ओही तरहें धर्म, भगवान, देवता आदि क विषय में लोकक धारणा बदलैत गेलै—पहिने भूत-प्रेत तकक पूजा, तखन कुल-देवता, ब्रह्म तहीं संगे कोटि-कोटि देवता-इन्द्र, वरुण, अग्नि आदि तखन फेरि एक भगवान, फेरि निराकार फेरि सर्वव्यापी प्रकृति-भगवान बगैरह।

ओही तरहें समाज-व्यवस्था पहिने सर्वतन्त्र स्वतन्त्र, बाब में मुँडक सरदार या मुनि लोकनि, फेरि इएह सरदार जागीरदार और राजा, चक्रवर्ती राजा आदि। एहि राजा लोकनिक समय में अबैत अबैत हमरा लोकनिक समाज (एशिया क मुख्यतः) एक पूर्ण व्यवस्था में बान्हल (Idyllic Community) में बान्हल गेल। गाँव गाँव सब तरहें स्वावलम्बित—एके गाँव में सब पेशाक लोक नौआ, बड़ही, कोइरी, डोम, बरै, हजाम, मलाह, जोलहा, तखिय, पटवारी और ब्राह्मण आदि सबहक इन्तजाम छलै। एखन तक लोकक जीवन पारिवारिक जीवन छलै। साग की कण जे घर में हुए खाइ अनतः कतहु नहि जाइ। रामायण महाभारत बँचैत रही। राजा कएँ

[२३]

गाम गाम सँ कर बसुलि क जान्हि बैठ-बेगार-शौगाति-सलासी भेटैन्ह—दिवानजी कें सेहो दावातपूजा भेटले तकैन्ह। जहाँ-तहाँ बिद्रोह होइत रहे। डाकू क बड़ डर रहे। डाक-प्रथा कमजोर रहे। ब्राह्मण क बड़ सम्मान होइत रहैन्ह। ओ बड़ल लिखल रहथु की नहि, वेद-पुराण जनैत रहथु की नहि मुदा जेना आमक आँठी सँ आमेक गाछ तहिना ब्राह्मण क बड़ा ब्राह्मणे और "पुज्य" से हो।

एहि जमाना क "राम-राज्य" क अपना सबहक ओत लोक बड़ प्रसंशा करै छै कारण, एक अपना लोकनि ब्राह्मण छी और ब्राह्मण कएँ मुफ्तक बड़ सुख आदर भेटैत रहैन्ह। दोसर एहि जमानाक जे किताब लिखल छैक ओ केओ राजा क दर-बारी या खुशामदिएक अधिकतर लिखल छैक। त एहि समय में बहुत लोक निरन्तर भट्टाचार्य रहए। जे किछु पढ़ल लिखल लोक रहए से ऊँचे जाति क और पढ़वोक अधिकार रहैन्ह ब्राह्मणे कें। राजा क दरब क तेहन ने आतंक रहे जे केओ ओकर खिलाफ नहि बाजि सकैत छल। राजाक एहि जुर्म कें "कड़ा न्याय" कहि कहि प्रसंशा क पुल बान्हल गेल छैन्ह। राजा एकर कोनो इन्मजाम करबे नहि करताह जे केओ भूखल नहि रहए मुदा भूख सँ आतुर भ जखन भोम्मा-बाला चोरि करए तऽ ओकरा पकड़ैला उस हाथ काटि लेल जाइ और नीकलोक "न्यायी" कहि कहि ओही राजा क प्रसंशा करैन्ह। असल में एहि जमाना में गरीब जाति बड़ सत्पावल जाइत रहए। साधारण लोक बड़ तकलीफ में रहए। लोक

इनार महेँक बेंग रहए। अज्ञान क कारण विज्ञान क अभाव में लोक कें बहुत परिश्रम करय पड़ै। छोट २ बीमारी क चलते वैद्यजी क करहा पीवैत २ मरिजाए। जे पिल्ही में आई एक सूर्य सँ एकदम आराम से पहिने कतबो करैला क सोर खाब तैयो गेले भर रही। वैद्यशास्त्रो कएँ दन्तकथाक स्तम्भ में खुटेसि देल गेल रहै जाहि सँ ओकर व्यवहार क्षेत्र नव नव वस्तु क अनुसन्धान दिस नहि जा पुरश्चरण-पाठ भ गेलैक। नुमा लए चर्खा काटऽ पड़ै। वैद्यनाथजी जएवा काल में कन्नारोहट मचि जाए जे आव कोन ठेकान घुरता की नहि से वैद्यनाथजी आव सबहक पहिल धियापुताक मंडप भऽ गेल। राजा क मुँहे कानून रहै। राजाक जुर्म सँ ब्राह्मणक डर सँ लोक त्रासित रहए। मुदा लक्ष्मेश्वर सिंह या कुलकमल झा लोकनि एहि गरीब किसान मजदूर क कमाई पर खूब सुख लूटथि। तरह-तरह क पशोआराम, तेल-फूलेल, इब, फूल, ढाका वाला घोड़ी, मखमल, अद्वी, कशीदा काढ़ल रंग-बिरंग क शाल सोना-चांतीक पलंग, संस्मर्मरक मकान, आगू-पाछू नौकर केओ हाथ में माटि लगबै लए, केओ सुपारीक कतरा लए, केओ कपड़ा पहिराबै लए, केओ पंखा ठुँकै लए, सजल सिपाही बल्लमबर्झा, राज-पुरोहित पंडित, हंसोद संघ क पंच, किछु "नीक विद्वान" आदि सँ हिनका लोकनिक दरबार साजबाजक संग जवान छोड़ी क, आँचर लऽक नोर पोछैत "खलि हे हमर दुखक नहि ओर" सँ गुंजैत रहए। दोसर दिश वैद्यासक दुपहरिया में खेत तमैत रौदिया बिन नोने मड़ुआक सुसाएल

रोटी खाए-पाम और नोर मिलि क कखनो मुंह में चला जाइ
त नोनगर लगलै और मोन में भेलै जे पहिने खूब साफक मुंह-
हाथ धो लै छी तखन खाएब । ई सोचि डावा चठाएब त देखै
जे अप्पे डावा पानि; पाछु दिश सुनि पड़लै "रधिया चुप-चाप
गेल छलै पानि भरऽ इनार पर त छोटका बौआ डावा फोड़ि
देखलखीन्ह जे एहि इनार पर तों किये पानि भरै छै और मारवो
कपलखीन्ह तऽ संगला क डावा में पानि अनलियै ।"

मनुष्य अनुभवक आधार पर अपन मोंगक पूर्तिक हेतु
नव-नव चीजक अनुसंधान करैत रहैये । पहिने पाथरक बर्छा
सँ शिकार मारए बाद में लोहा क बनौलक । ओही तरहें
भाफक शक्ति क पता लगौलक । रेल चलब लागल, कपड़ा क
मिल खुजलै । बिजली क पता लगलै ओहि सँ आरो कारबार
बढ़ि गेलैक । शरीर कोना चलै अछि, कोन चीज खेला सँ
की होइ छै, कोनो बीमारी किये होइछै आदि, तरह-तरह क
धातु क पता, खान क पता, रसायनक पता, प्रकृति क नियम
क पता, विश्वक पता आदि जाग लगलै । जे दस गज कपड़ा
एक विधवा लोकनि कएँ डिविया क इजोत में चर्खा घनर-घनर
करैत-करैत ओखि चोहरा जाइह, कान बहोर भ जाइह,
जोलहा-जोखिनिया कूची लऽक बाप-बाप क रगड़ए सैयो ताक
बिगड़ि जाइ सैह हजार दस गज कपड़ा मिल सँ बिन हाहो-
बरवाही कएँ धड़-धड़ निकलऽ लागल । एहि राक्षस स्वरूप
मिलक भोजन लए खेती में क्रान्तिकारी परिवर्तन ट्रैक्टर-
वैज्ञानिक खाद आदि आवि गेल । ओही तरहें हरेक विषय में

परिवर्तन भेलैक । समाज में नव दू वर्ग भेलैक—पूजोपवि
और सर्वहारा मजदूर वर्ग । जे रधिया कएँ अहाँक छोटका बौआ
इनार सँ पानि भरै मारने छलखीन्ह से बम्बई सूती मिल
में चल गेल और आव परम स्वतन्त्र अछि । ओकरा आव
अपने कवाटर में पाइप सँ पानि खसै छै । अहाँ ओकरा भरि
दिन अपना काल में जोतने रहै छलिये आव ओ अपन आठ
घंटा ड्यूटी बजा लै अछि—सॉफ क सिनेमा देखै अछि, कोट-
पेन्ट लगोने पार्क क हवा खाइ अछि ।

कल-कारखाना अएला सँ पुरनका समाज ढहि क खसि
पड़ल । मिल क साड़ी-साया, कॉटा-क्लीप, तेल-फुजेल, फाउन्टेन-
पेन घड़ी, ब्लाउज, अलता, पाचडर, भेसलिन और चट्टी आदि
जाहि सरकी तर में हवो कएँ जाएब कठिन तहू ठाम ओकर
राज कायम भ गेलैक । लोक हॉ-हॉ करितै रहल की रोहिणी
बौआखिन चट्टी पहिरने मोंसु लाड़ि देखैन्ह । बाबू अंगरखा
खोलिकए छाड़ छथि प्रभा दाई साड़ी तर क साया थारी परसै
काल में झुलै छैन्ह । बाबू एखनहुँ पुराण बँचै छथि जे प्याजु
केवल चाण्डाले खाए फणो दाई कएँ बिन प्याजे माछ नीके
ने लगै छैन्ह । काका पहिने होटल में खाएब हराम बुझैत
रहथि मुदा अखनि रैयति पर मुकदमा क पैरवी लए दिन-राति
कचहरीए में रह पड़ैन्ह त भाब बिन आमलेटे रसे ने अबै
छैन्ह । मफिली बौआखिन द्विरागमन में कनात लगा क आएल
रहथि और तेहने घोघ-मदौत काढ़ने रहथि जे बुझि पड़ए जे
नाचघरक पुतरी छिकी मुदा भइबट क बेरि में खेत क आदि
पर जा भैंसूर सँ लड़ि अयलीह ।

सुन्दरबाबा अपने सब भातिजों के बैठे समान मानेत रहथि मुदा बैतरणीय काल में हुनकर सुपुत्र गौड़ी बाबू संदुक क कुंजी ओरियाक किन्तु नुका क आँगन में राखि अयलाह। कुचाइबाबा जहाँ जे वैद्यनाथजी सात सात टा विआह करितथि से स्नाइले की दीतथिन्ह वगौर। छोटका बामन सब त बेटी कएँ खर्चा दइत दइत आब अपनहिँ फुरसति भ गेल। धकजरी-पिंढारुछ बरद मानुषेक खुर-पुजाइ में छुट्टी भ गेल। पूब भरक बामन सब जेना गाए गए साद त कैए तहिना धारे म्हा कए त कै गए जुआएल बेटी क अंगैठी देखैत रहए मगर धारे म्हा क सोज नहिँ छोड़ए। आब अपनहिँ एक पति पत्नी विआह चल लागल। आचार-विचार बदलि गेल। “जमाना उनठि गेलै अछि, धोर कलियुग आवि गेल” ई ख्याल छैन्ह योग-शोति बाबू क।

व्यवहारिक विज्ञानक जमाना आवि गेलै। अज्ञान क नारा होम लगलै। आब लोक बुझ लगलै जे वर्षा कोना होइछै, पानि कोना बनै छै, दिन-राति किए होइछै, दुख-रोग किये होइछै और कोना छूटत, आगि की छिये आदि तैं आब इन्द्र, वरुण, अग्नि, भूत-प्रेत, कबूला-यासिल आदि दिन-दिन खतम भ रहलै अछि। महादेव क पूजा करै वाला पर लोक हँस लगलै कारण लिंग-पूजा तखन लोक अज्ञान सँ करै छलै जखन लिंगक्रिया सँ बच्चा क जन्म पर आश्चर्यित भ जाइछल। मुदा पूँजीवादियो समाज में ‘एक भगवान’, ‘अन्तर्यामी शक्ति’, ‘अपरिवर्तनशील’ आदि कोने ने कोनो रूप में जीवैत रहलाह।

पूँजीवादी समाज में खोगण मजुरीन भऽ क कमाए लागल त फेरि ओ पहिने जहाँ स्वतन्त्र होम लागल। कल-कारखाना, स्कूल-कालेज आदि सब ठाम खोगण आबए-जाए लागल। सिर्फ ओहने खोगण जे इनार महक बैंग अछि पुरान-समाज सँ विपकल अछि और अज्ञानवश मरल गाए क स्तन दाँत धऽ धऽ भीचै अछि मुदा दुध नहिँ भेटै छै। पुरान-समाज आब मरल गाए छो ओ ककरो दुध नहिँ द सकै अछि। किछु खोगण अधकचरा भ गेल छथि। हिनका लोकनिक नवीनता स्तो-पाठहर, लिपस्टिक, भागू कोचा तै पर सँ रुमाज खोसल चट्टी, घड़ी और चरमे तक सोमित छैन्ह। हिनका “अपनी चालि” बिसरि गेलि छैन्ह। ई लोकनि नाच मँहक विपटा भ गेल छथि—पढ़-लिखब, बात-विचार में पुरान और फेशन-काशन में नव।

पूँजीवादी समाज में राज चलेवाक नव ढंग भेलैक। जगह-जगह रेल-तार, थाना-पुलिस, नियम-कानून, अखबार, सभा, बोट, असेम्बली आदि क प्रथा चललै। पुरनका समाज में ई सब नहिँ रहै। एखनहुँ तक नेपाल में नहिँ छै। नव समाज क शासन-व्यवस्था कएँ “लोक-राज” कहै छै।

पूँजीवादियो समाज में हम देखै छिये जे जीवन क साधन (चर्खा, हर-फार सँ कल-कारखाना और ट्रैक्टर आदि) जैहने बदलि गेलै की सम्पूर्ण समाज क बाहरी स्वरूप समयानुकूल एकदम बदलि गेलैक। एक टा नव समाज क जन्म भेलैक जकर नव शासन-व्यवस्था, धर्म, रहन-सहन, पहिरन-ओढ़न, आचार-विचार, मान-प्रतिष्ठा और मानसिक-गठन आदि छैक।

नेपाल राजक शासन व्यवस्था और अपना लोकनिक शासन व्यवस्थामें जे फर्क अहाँ देखै छिये सोह फर्क करीब २ सामन्तवाद क "रामराज्य" और पूंजीवाद क "लोक-राज्य" में छै। पूंजीवाद क जमाना में खास प्रधानता रहैछ उद्योग-धन्दा और व्यापारक। व्यापारक लेल जरूरी छै जे काँच माल (तूर, पाट, लोहा, अबरख आदि) अनेक और तैयार वस्तु (कपड़ा, बोरा, कुड़इड़ि-कोदारि) पहुँचेवाक साधन हो। तँ अंग्रेज व्यापारी देशक कोन-कोन में रेल-लाइन घुसौलक। व्यापारक सामान लएवा-जएवा में कतहु लूटि-पाट नहि हो सकरा लेल जरूरी छलै जे सब गाँव में ओकर आदमी रहै तँ कोतवाल, थाना-पुलिस, कचहरी आदि सब जरूरी भ गेलैक। कानून बनाएब सेहो बड़ जरूरी भ गेलैक। बिना ओकरे लूटनिहार कएँ सञ्जाए, कारखाना में काज करै लए मजदूर (यदि कानून में सबकएँ बराबरि नहि बना दितै त लोक अपन अपन बहिया कएँ जबरदस्ती अपने काज में रखितै) हैवे नहि करितै। जमीन व्यवस्था क लेल कानून, उत्तराधिकारक कानून, रक्षिष्टी, कारखानाक कानून ई सब स्वतन्त्र शोषण क

लेल परम जरूरी रहे। बिना कानून क भूत बनीन शोषण नहि केन जा सकै छै। छोटानागपुरक आदिवासी कएँ जे स्वभावतः नियमकानून क विषय में एकदम अनभिज्ञ छल मारि मारि कऽ कानून क आतंक बुझाओल गेल छैक जाहि सँ लोक में ई धारणा भ जाइ जे ओकर दयनीय हालत रहब स्वाभाविक छिये कारण कानूने सेह छै। एहनसन कम जेना कानून कोनो अलौकिक शक्ति बनवइत हो।

व्यापारक लेल समयक बढ़ कीमत होइ छै। एके घंटा में चीजक दाम घटि बढ़ि गेला सँ करोड़ो टका क नोकशान भ सकै छै ओकरा लेल तार, टेलीफोन, रेडियो आदि सब किछु परम आवश्यक छै। फेरि एहि सब विषय कें चलबै लै पढ़ल-लिखल लोक (किरानो) क जरूरी तँ हेतु स्कूल कौलेज क स्थापना कएलक। यद्यपि पूंजीवाद ई सब काज अपना फायदा लेल कैलक मुदा एहि सब सँ लोकक सेहो उपकार भेलैक जेना बाट कातक घरवाला जौ अपना दालान पर लालटेन बारत त बाट पर गेनहार कें से हो उपकार हएतैक और इजोत में चलनहार सँ दु पाई टैक्स से हो घरवाला कए भेटि जएतैक। चूँकि पूंजीवाद सँ लोकक उपकार भ सकै छलै तएँ पूंजीवादक आंदोलन कएँ लोकक मदति भेटलैक। निरंकुश राजाक, खिलाफ जनिकर मुँहे कानून रहेन्ह पूंजीवाद आवाज उठौलक और लोकक मदति सँ ओहि निरंकुश सत्ता कें या त नाश क देलकैन्ह या चुप। लोक आन्दोलन सँ पूंजीवादी क राज्य कायम भेल। लोक सभा (असेम्बली) बनल जाहि में लोक

अपन अपन आदमी के बोट सँ चुनि क पठावए और ओ लोकनि ओत कानून बनावथि। राज्यसत्ता एहि लोक-सभाक हाथ में बल अपलैक।

ई सब त भेल ऊपरी व्यवस्था मुदा पूँजीवाद कएँ एकटा भारी घूँतक कोड़ा लागल छै। ओ कोड़ा थोक नफा कमएवाक अनिवार्य प्रवृत्ति। बिन नफे पूँजीवाद जीविए नै सकै अछि और सब दिन नफा हँव ओहि व्यवस्था में असंभव छै। कहब से कोना? देख, पूँजीपति को करै अछि? मानलिय भारे दिन ओकरा कारखाना में केओ मजदूर काज करै छै और एक दिन में चारि टा कोदरि बना देलकै। पूँजीपति ओकरा एक दिनक दु टका मजदूरी देलकै और मानलिय जे दु रुपैया कच्चा लोहाक दाम, मशीनक घिसाई नौकर चाकरक दरमाहा आदि सब में लगलै। त ओहि चारि कोदारिक दाम हेवाक चाहौ ४) रु० याने एक रुपये कोदारि। मुदा पूँजीपति बेचत दु रुपये याने ८) रु० में। त ई फाजिल ४) रु० कत सँ ओतै और के देतै। ई फाजिल ४) रु० लोक कएँ देब पड़तै। चूँकि कोदारि खरीदब बड़ जरूरी छै तएँ लोक कपड़ा लता नहि खरीदि कए, धिया-पुता कएँ गाँव में हॉकि कए या दुखितक उचित दवाई-बोगे नहि करा क कोदारि खरीद लेत। मुदा एना कतेक दिन लोक खरीद सकत जखन पूँजीपति देतै लोक केँ चारि रुपैया और लोक सँ चूखि लेतैक आठ रुपैया एना चुसैत-चुसैत एक दिन ओतेक जहिया लोकक पास कोना चीज खरीदवा लै पैसा नहि रहतैक दोसर दिश पूँजीपतिक कारखाना नित

टाइन लाख-लाख चीज बगिलैत रहै छै। लोक भूखे मरैत रहत और बाजार में ढेर सामान पड़ल रहतै मुदा लोक केँ पाइए नहि रहतैक जे कोना चीज खरीदत। जखन चीज नहि विकैतैक तखन पूँजीपति केँ अपन कारखाना बन्द कर पड़ै छै कारण ओकर गोदाम में माल टाल लागल रहै छै। एहना हालत में लाख-लाख मजदूर बेकार भ जाइ अछि, भूखे मर लगै अछि। रेल-तार-टेलीफोन सयहक कम जरूरति भ जाइ छै और हर विभाग सँ नौकरापेशा लोक केँ जबाब भेट लगै छै। पढ़लो-लिखल लोक नौकरी बिना मारल किरै अछि। एकरे कहै छै पूँजीवादक आर्थिक संकट। इएह छिकै पूँजीवादक अन्तरविरोध जकरा पूँजीवाद कोना हालत में रोकि नहि सकै अछि। १९२९ ई० में एहने संकट आपल जाहि में एकटा अमेरिका में करोड़ो मन गहुँम जरा देल गेलै, इंग्लैण्ड में लाखक लाख संतोला समुद्र में भसा देलकै। अहाँ कहब जे एहि लोक केँ किए ने द देलकै जे दुरि क देलकै। यदि ओ पूँजीपति लोक केँ ओ समान दऽ दितैक तखन तऽ लोकक जरूरति पूर्ति न जएतैक और फेरि जे सामान कारखाना में बनवैत से केओ नहि खरीदितैक। एहन समय में बड़ कंपनी, बैंक, ट्रस्ट सब फेल क जाइ छै और छोटका त एकदम मारल जाइछै। आई फेरि दुनिया में एहने संकट आवि गेल छैक। अमेरिका क कारखाना में ततेक पनल आवि गेल छैक। अमेरिका क कारखाना में ततेक पनल चीज तैयार छै जतेक दुनियाँ छ वर्ष में खर्च करत। तँ अमेरिका मुखल डाइन जकाँ बीभा रहल अछि ट्रूमैन योजना

भारी योजना, नेहरू योजना आदि क भेष में से कोनो तरह
जान देश में जा अपन सोदा बेचि सकए ।

अहाँ देखलिये जे जे पूंजीवाद एक दिन कल-कारखाना
खोले छल रेल-घार लगवै छल, गृह-कौलेज खोलने छल,
मासगियो के पदवे लिखवै छल और ओकरा कल कारखाना
में काम दै छल सैह पूंजीवाद के अपन आन्तरिक संकट
क चलते जे ओकरा में अवश्यममावी छै, सब किछु बन्द कर
बदै छै । मासगि क कोन कथा पुरुषो के नौकरी नहि भेटै
छै, पदवे-लिखव बन्द कर पदै छै । एतवे नहि, यदि कोनो
नव पैदावार क तरीका जाहि सँ पैदावार बहुत बढि सकै छै,
अनुसंधान होइ छै त पूंजीपति ओकरा दबा रखै अछि
कारण ओकरा निकलता सँ ओकरा अपन मरीन बरख
बढतैक, बीजक पैदावार एतेक बढि जएतैक जे पूंजीवाद क
संकट जरूरी अओतैक । यदि एखन अटम शक्ति क रहस्य
अमरीका सोलि दिअ त एक हिस्सावे ओ पूंजीवाद मृत्यु दिन
निश्चित कब देत । एहन हजारो दवाई छै जाहि सँ मानव-
समाज क बहुत फायदा हएतैक किन्तु पूंजीपति ओहि वैज्ञा-
निक सँ ओकरा सरीद कए छुप राखि लेने अछि जे ओकर बदला
में से दवाई ओइ सँ बहुत निकम्मा छै ओही पूंजीपति कए
से बिकाइत रही । वर्तमान युग में पूंजीवाद दुनिया के पाछु
दिश ओबै वाला शक्ति भ गेल अछि । ओहि सँ आव मानव-
समाज असंख्य नोकसान उठा रहल अछि । ओकर सर्वनाश
करब जरूरी ठा नहि छै ओ बिना कएने मनुष्य समाज स्वयं
गुप्त भ आपत ।

सवाल उठै अछि पूंजीवाद एहि संकट के केना आगरवै
अछि और लोक ओकर सर्वनाश कोना करए और आगू हो
करए ?

पूंजीवाद क जीवन में ई अति उत्पादन संकट के बेरि
अएतै अछि । प्रारम्भ में इंग्लैण्ड के जलन अरना देश
क सौर अरना देश में नहि बिहा सकतै तखन आ अरन
सौर हिन्दुस्तान, अमरीका, चीन, अस्ट्रेलिया, अरब देश,
सुरा पूर्व आदि देश में बेचि कए व्यापार कएलक । सुरा थोड़वे
दिनक बाद अहू सब देश कएँ चूसि कए छिटो यना देलकैन्ह ।
ओही समय फ्राँस, इटली और जर्मनी क पूंजीवाद से हो
बहुत उन्नति क गेल । खास क जर्मनी के बहुत जरूरी
भेलक जे अपन चीज बेचै ओकरो हिन्दुस्तान सन बाजार
भेटे । सुरा समूचा दुनिया के त इंग्लैण्ड पहिनहि हदपते
रहए तएँ इंग्लैण्ड और जर्मनी में १९१४ ई- में लड़ाई भेलै ।
जर्मनी चाहलक जे इंग्लैण्ड सँ अरना लए बाजार छीन ला ।

जर्मनी हारि गेल । थोड़े दिन क लेल पूंजीवाद क संकट
हल भ गेल । मुदा लड़ाई क कारण नहि खतम भेल छल ।
जावत तक पूंजीवाद रहत लड़ाई हएवे करत । थोड़वे दिनक
बाद जर्मनी फेरि पनकि उठल । एहि बेरि ओकरा संग जापानो
उठल । मुदा एहि बेरि जर्मनीक जनता क आँखि पहिलुका
अपेक्षा बहुत किछु खुजि गेल छलैक । एहि बेरि जखन
जर्मनी में संकट अएलहि त लोक चाहलक जे राज्य पर कब्जा
क ली । पूंजीवादी व्यवस्था के अखन कए समाजवाद क

स्थापना करो। जगनी के पूंजीपति वर्ग सचेत भ गेले। ओ अपन दलाल हिटलर के चोरा बोबाजी कए जेना गेदुआ रंग ओदनी सहिना "राष्ट्रीय सोशलिस्ट" के खाल ओढ़ा के ठाढ़ कएलक। तमाम बड़का बड़का पूंजीपति हिटलर के घन-न-मन तीनू सँ मदति देलकै। चुनाव में सोशलिस्ट पार्टी (सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक पार्टी) हिटलर कए मदति देलकै जाहि सँ कम्युनिस्ट पार्टी बहुत मजबूत पार्टी होइतहुँ हारि गेल। हिटलर के हाथ में राज सत्ता अभितहि ओ मजदूर आन्दोलन के गोलोक बल सँ खून नदी में डुबा देलक। मजदूर आन्दोलन के सब रौ अगुआ नेता हजार-हजार कम्युनिस्ट के गोली सँ उड़ा देलक। पूंजीवाद के हकोबला लोक सभा, वोट आदि सब कए हिटलर कए झाक के देलक। अपन नादिरशाही कायम के देलक। एक बेरि जखन जनता के सब रौ अगुआ हिस्सा कम्युनिस्ट पार्टी कए खतम के देन गेल तखन जे केओ जे किछु बाजल तनिका सब गोली मुँह बौने रहै छलैन्ह।

हिटलर बेकारी के समस्या हल करै लए युद्ध के तैयारी करू लागल। बेकार लोग के फौज तथा फौजी कारखाना में काज द देल कै। अति पैदावार संकट से हो सम्पूर्ण उद्योग कए युद्ध-वत कएला संसुलम्मा गेलैक। लोक के भूख कए शांत करवा लए हिटलर लोक के कहए लगलै जे "दश जीव कए भनै छी त तोरा सब सुखित भ जाएवह।" एहि भूत-मुलैया में सम्पूर्ण राष्ट्र के प.रौ के युद्ध के हथियार बत्ता

देलकै। मुख्यस्थित कम्युनिस्ट पार्टी के अभाव में ओकर जवाब केओ नहि द सकलै। सोशलिस्ट पार्टी के तऽ ई विश्व-व्यापी परंपरा छै जे चाँचयाएत "समाजवाद, समाजवाद" मुदा आइ तक दुनिया के एको देश में समाजवाद कायम नहि कएलक अछि। असल में त ई पार्टी समाजवाद जाहि सँ कायम नहि हो सकरा लेल समाजवाद के नाम पर कोनो ठा कुकर्म चठा नहि रखलक अछि। जर्मनियों में अपने परम्परा के निवाहलक। हिटलर सम्पूर्ण स्त्री जाति कए फेरि चुल्हा फुके में लगौलक। ओकर सिद्धान्त रहै जे स्त्री चुल्हा पजार-बाक और बच्चा जन्मेबाक यन्त्र थोकि। हिटलर जाहि तरह के राज व्यवस्था कायम कएलक ओकरा गुंडाराज या "फासिज्म" कहल जाइ छै। मुदा फासिज्म में पूंजीवाद के अन्तरविरोध के नाश नहि होइ छै बल्कि और तेज भ जाइ छै। हिटलर के तुरन्त लड़ाई करय पड़लै और ओहि लड़ाई में ओकर सर्वनाश भऽ गेलैक। पूंजीवाद के अपने उत्पन्न कैल आर्थिक संकट सँ बचवाक दुइएटा रास्ता छैक गुंडाराज या लड़ाई। असल में गुंडोराज लड़ाईए लए कायम होइ छै, लड़ाईए ओकर अर्थ नीति रहै छै।

आब सवाल उठै अछि एहना संकट काल में लोक-सभा (असेम्बली) की करै अछि ?

हम अहाँ केँ सब पहिने कहलहुँ अछि पूंजीवादी के जमाना में एहन लोक सभा या सरकार बनाएब पूंजीवाद के लेल जरूरी रहै छै तँ एहन सरकार ओ बनबै अछि। ओहि

सरकार सँ ओ जे जे चाहे अछि करवै अछि । लोक कए देखै में अबै छै जे सरकार निष्पक्ष होइ अछि और कचहरी में बैसल जज से हो निष्पक्ष होइ अछि मुदा ई बात एकदम भ्रम थीक । जतेक अफसरान चाहे ओ पुलिस विभाग क हो अथवा न्याय विभाग क सब कोनो जे कोने जमींदार-पूँजीपति क घेटा-भातिज रहै छै । चाचा चार भतीजा काजो हिनका सँ जे न्याय में शक करए से पाजो ! चुनाव जे होइ छै ताहि में पूँजीपति बए पास रुपया रहै छै गलत-सलत प्रचार करै अछि । लोक आदमी क वेष में (खादी-टोपी) अपन दलाल कए कीतबा लै अछि और एहि तऽहें लोक-सभा पर कब्जा कएने रहै अछि । बोट में तऽ रुपैया और तिकड़म जकरा पास हँतै सैह छोटत । महाराज साहेबक खिलाफ ठोठरा मुसहड़ कोना जीतत ? यदि महाराज बड़ बदनाम रहताह त लाख दु लाख में कोनो लोक नेता कें फँसा लेताह और ठोठरा कए हरा देथीन्ह । तहूँ सँ जौ नहि हेतैन्ह त जौ ठोठरा दल क लोक-सभा पर कब्जा भ जएतैक तऽ तमाम अफसरान फौजो, अदालती, पुलिस सबहक बल सँ गुंडाराज कायम कए लेताह बेना स्पेन में । निष्कर्ष ई भेल जे जकरा हाथ में जीवन निर्वाह क साधन रहै छै सरकार या लोक-सभा ओकरे रहै छै । जावत तक जमीन पर कल-कारखाना पर जमींदार-पूँजीपति वर्ग क अधिकार छै तावत तक चाहे नेहरू क सरकार होइन्ह अथवा एटली कएँ सरकार पर अधिकार जमींदारे-पूँजीपति कए मूलतः रहैतैक । तँ एहना संकट काल में लोक-सभा से हो

जे जे पूँजीपति वर्ग कहै छै ताहि पर मोहर लगवैत रहै अछि ।

तखन पूँजीवादी संकट सँ उबरवाक कोन उपाय ? उपाय एएह जे जखन बाजार में दिश कल-कारखाना बन्द होइत रहै छै, लाखों आदमी बेकार मारल फिरै अछि, स्कूल-कालिज बन्द होमै पर रहै छै, मिल-मालिक क गोशाम में एक लाख-लाख गाँठ कपड़ा पड़ल रहै छै, हजारों मन गहूँ, फल, मीस खएवाक खानवर या अन्य तरहक लोक क जरूरत क सामान बरबाद कएल जाइ छै और दोसर दिश अन्न बिना भूखमरो होइछै, बेकार लोक भिखमंगा भ जाइ अछि, लोक क माए-बहीन नाकट रहै छै तखन मजदूर-किसान राज पर कब्जा कए लै अछि । एकरे कहै छै इनकलाष । पुलिस-फौज पुरनका शासक क अठगवस्था स एतेक तंग भ गेल रहै अछि जे राजसत्ता पर कब्जा कैएन हार क दिश मिलि जाइ छै । तखनि लोक जमींदार सँ जमीन छीनि गरीब किसान, खेतिहर-मजदूर में बाँटि दे छै । कल-कारखाना पर मजदूर कब्जा कए लै अछि । अपन पुलिस-फौज, कोर्ट-कानून, बनवै अछि । घनीक क घन गरीब में बाँटि देल जाइ छै । फेरि सामूहिक उत्पादन क धरीका सँ देश क उत्पादन कए सन्नति क शिखर पर पहुँचा देल जाइ छै । लोक कें पैसा भ जाइ छै । किसान अन्न उपजावए लगै अछि, मजदूर कपड़ा, तेल, नोन, एरोभाराम क चीज, औजार आदि । सब कएँ काज भेटि जाइ छै आनन्द सँ जीवन बीतबए लगै अछि । आब यदि ओ एक दिन में चारि टा कोदारि बनौने रहत त ओकरा चारु कोदारिक दाम आठ टाका भेटि जएतैक ।

केओ नका कमेनहार नहि रहतैक। रूस देश में एहने किसान-मजदूर क राज कम्युनिस्ट पार्टी वाला १९१७ में इनका कए कायम कएलैन्ह। बिना इनका कएने एहन राज कहियो नहि कायम भ सकैत अछि तकर साक्षी आइ तऊ क दुनिया क इतिहास अछि। आइ रूस में हजार में ६६५ पदल-लिखल लोक छै। केओ स्त्री पुरुष बेकार नहि अछि। मासगि-पुरुष दुनू क हक बराबरि छै दुनू पदल-लिखल होशियार ! रूस क मासगि हवाई बहाज, टैंक, ट्रैक्टर हूँकै अछि। दुनिया में सबसँ तेज हवाई हूँकै में फस्ट केनिहार एक मासगि थोक। रूस क लोगण अहाँ सबहक अहाँ नाना तरहक स्त्री बीमारी सँ ग्रसित नहि रहै अछि। पुरुष-मासगि दुनू कसरत करै अछि। सूख हठ-पुष्ट रहै अछि। रूस में रंडी क नाम नहि छै। केओ पुरुष वा मासगि एक टा सँ बेसी स्त्री या पुरुष क संग नहि रहि सकै अछि। तलाक करीब करीब एकदम नहि होइ छै। सब पदल-लिखल होशियार तन्दुरुस्त रहै छै तएँ अनाचार क नाम नहि छै। केओ युवक कोनो युवती सँ ओकर सम्मान हानि क कोनो बात कहथीन्ह त ओहो हुनका सँ कमजोर नहि रहै अछि ऊपर सँ दु बप्पड़ बदेतैन्ह। असल में एक नव, आदर्श आचार-विचारक सृष्टि होइ छै जे प्राप्त करै लए मनुष्य जाति कहिया सँ स्वप्न देखै छल। ने ओतए घोष छै ने घोष तरसँ सोंप मारल जाइ छै। स्त्री पुरुष दुनू कमेनिहार (सिर्फ ६ घंटा काज और २५०) ४० (पहिलुका) सँ कम ककरो दरमाहा नहि। राज क दिश सँ सबकएँ मुफ्त शिक्षा देल जाइ छै। रूस क कोनो गांव

में बिबिया लाकटेन नहि जरे छ पर-पर बिजली लागल छै। घर घर में रेडियो छै। सब गाम क ऋष, नाच-घर, स्कूल, पार्क, सिनेमा-घर आदि छै सिनेमा ओतए शिक्षक क काज करै छै। एक टा नव संस्कृतिक घर ठाढ़ भेल छै जकरा लए मनुष्य जाति छलाइत छल। बीमार बहुत कम होइछै। ओतए केवल सरकारी डाक्टर छै। फीस लेवा लए बीमारी बढ़ाएल नहि जाइ छै। डाक्टर क असल ध्येय ई रहै छै जे सब में बीमारी होमए नहि दो ई नहि जे हेजा हएतैक त हमर खूब चलत।

आइ रूस में नहि, रूस सँ सबत पश्चिम जर्मनी, रूम, बल्गेरिया, हंगरी, अल्बानिया, चेकोस्लावाकिया और युगोस्लाविया सब में एहने शासन-व्यवस्था कायम भ गेलैक अछि। एक तिहाई चीन में से हो कम्प्युनिस्ट पार्टी एहने राज व्यवस्था कायम कैलकै अछि। आब सम्पूर्ण संसार में हएवाक भारी छै। बिना पूँजीवाद कएँ सम्पूर्ण संसार में पसर सँ केओ नहि रोकि सकलै तहिना कम्युनिज्म कएँ (जाहि तरहक राज रूस में छ) केओ नहि रोकि सकै छै। ई मानव जाति क विकास क आगू सोढ़ी थिकैक। जौ मनुष्य जाति कएँ आगू बढ़वाक छैक त ई सोढ़ी पर पैर देवैक टा पड़तन्हि एकरा केओ रोकि नहि सकै छै।

जे पूँजीवाद क संकट क विषय में ऊपर हम कहलहुँ अछि से संकट सँ आगू पूँजीवाद ग्रसित अछि। एहि बेर क संकट और भयंकर छैक कारण औद्योगिक संकट क संग संग कृषी संकटो गांथल छैक। दुनिया दुनिया में पूँजीवाद क बाजार

परिणाम अपेक्षा बहुत कम गोलैक अर्थात् जे बाँवलो छै सेरो
 डंबाडो छै (कम्युनिस्ट आन्दोलन सँ) । असगरे अमरीका क
 गोशम में ततवाक माल जमा छै जतवा सम्पूर्ण दुनियाँ छ वर्ष
 में खपाएत । अहिना बिज्ञानक नव-नव अनुसंधानक लेल लेबो-
 रेटरीज छैक तहिना मानव जातिक एहि सामाजिक राजनैतिक
 स्तर पर पहुँचै लेल कम्युनिस्ट पार्टी क जरूरी छै । कम्युनिस्ट
 पार्टी एक लेबोरेटरी माल छी जतए सँ वैज्ञानिक लोकनि अपन
 अनुसंधान करै छथि । जेना दुनिया क कोनो कोन में बैसल
 एक वैज्ञानिक व्यवहार परिचा सँ एके फल पर पहुँचै अछि
 तहिना कोनो देश क कम्युनिस्ट । एहि विचार एकता में कोनो
 आश्चर्य नाई छै ।

ई सब करै में रुसवाला किएक समर्थ भेल ? कारण
 ओतए असल सत्ता जनता क हाथ में छैक । कहै जाए तब
 हिन्दुस्तानी में सत्ता जनतेक हाथ में छैक मुदा ई केहन घोखा
 छिये से हम अहाँ सबकोओ जने छी । अखन कल-कारखाना
 क मालिक ताता-बिड़ला अछि अखन जमीन क मालिक अमी-
 न्दारअडि तखन भला सत्ता क मालिक जनता कोना भेल ।
 उत्पादन क साधन के मालिक जे अछि ऐएह सत्ता या सरकार
 क मालिक होइ छै । चाहे कतबहु ने जोर जोर सँ जमाहिर
 काळ बिचियाथु जे ई जनता क राज थीक मुदा सब व्यर्थ ।
 जनता क राज भेता सँ ई जनता क हाथ में रहतैक जे कतेक
 एच० डी० ओ० ओ ककरा बहाल करै अछि । उदाहरणतः
 एहि मित्र क मनेजर के हुए या एहि मनेजर के बिकाछि देल

जाए एकर निरूपण ओहि मित्र क मजदूर करत ने कि हजार
 कोश दूर दिल्ली में बैसल अफसर क इच्छे टा । फेरि चूनक
 एच० डी० ओ० के अखन जनता चाहे अविरवास कय हटा सके
 न । पूँजीवादी जनता राज जेहन हिन्दुस्तान में अछि और
 कम्युनिस्ट जनता राज जेहन रुस में छैक एएह मूल फर्क छैक
 और अहि फर्क कारण जतए रुस में सब सुखीसम्पन्न रहै अछि
 अपना देश में सब सात हजारो हजार भूखे अकाल और
 महामारी में मरै अछि । कम्युनिस्ट प्रजातन्त्र असल सत्ता सब
 सम्पति या उत्पादन क साधन क मालिक रहै अछि ।

